* श्री कृष्णायनमः *

येन व्याप्त मिदं सर्वं जगत्स्थावर जङ्गमम् ॥
तं वन्दे परमात्मनं कृष्णाख्यं भक्त वत्सलम् ॥ १ ॥

भारतवर्ष की हिन्दू जनता की सेवा में

श्रीकुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति की तरफ़ से

* अपील *

प्रकाशक—

लाला दयालीराम बी० ए० के० आई० एच०

रिटायर्ड डायरैक्टर औफ़ पब्लिक इन्सट्रक्शन

व सैक्रेटरी समिति ।

ॐ

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

श्रीकुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति की तरफ से

* अपील *

गीता भवन

श्लोक—प्रपन्न पारिजाताय तोत्र वेत्रैक पाणये ।
ज्ञान मुद्राय कृष्णाय गीतामृत दुहे नमः ॥

ऐसा कौन हिन्दू है जो प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र स्थान जहां महा-भारत युद्ध हुआ था, जो श्रृष्टि की उत्पत्ति की असली जगह है से परचित न होगा, इस स्थान का यथार्थ नाम ब्रह्मा के नाम पर जिसने श्रृष्टि को उत्पन्न किया प्रारम्भ में ब्रह्मा-वर्त था, सरस्वती जो ब्रह्मा की शक्ति है सिर्फ इसी जगह बहती है। इस पवित्र भूमि की जिसमें अनेक प्रसद्धतीर्थ ४८ कोस में फैले हुये हैं अति शोचनीय अवस्था में है श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार सुसाइटी जो कुछ वर्षों से कायम हुई है ने घाटों धर्मशालाओं इत्यादि की दशा को ठीक करने के लिये पूर्ण प्रयत्न किया है परन्तु अभी बहुत कुछ करना बाकी है। बहुत पवित्र ऐतिहासिक स्थान ज्योतिसर जहां भगवान कृष्ण ने अमृत रूपी वर्षा करने

वाले मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले तथा उच्च करने वाले श्लोक अर्जुन के ज़रिये दोनों सेनाओं के बीच ऐसे समय में जब कि बाणों की वर्षा हो रही थी सुनाये की दशा विशेष कर शोचनीय अवस्था में है यह पूज्य स्थान जहां अर्जुन का रथ खड़ा था वहां से मीलों तक उत्तम दृश्य दिखाई देता है बग़ैर किसी स्मृति या चिह्न के पड़ा हुआ था, हिज़ हाईनैस महाराजाधिराज दरभङ्गा की उदारता से अब संस्थाने उस स्थान पर सङ्गमरमर का मण्डप ऐतिहासिक वडवृक्ष के नीचे तैयार कराया है उसके पास जो सरोवर है और बहुत लम्बी चौड़ी भूमि घेरे हुये है वह अब कीचड तथा मिट्टी से भरा पड़ा है और ग्रीष्म ऋतु में पानी सूख जाता है इस पवित्र सरोवर के कोने में जो एक घाट था वह भी बुरी दशा में है, अब इस पवित्र सरोवर के लिये दुबारा खुदवाने की अत्यन्त आवश्यक्ता है क्यों कि यह स्थान तमाम भारतवर्ष के हिन्दुओं के लिये पवित्र तथा पूज्य है, और तमाम संसार में प्रसिद्ध है, संसार में कोई ऐसा स्थान नहीं जहां भगवान् ने स्वयं गीता के रहस्य को (जो भगवान् की भक्ति की ओर ले जाता है और जिससे स्वयं ही सेवा की इच्छा प्रकट होती है) वर्णन किया हुआ श्री भागवत गीता में श्री कृष्ण ने सिद्धि कर दिया है इसको प्राप्त करने के लिये श्रद्धा व भक्ति और दृढ़ प्रतिज्ञों के लिये सरल उपाय है।

प्रेम के इस बंधन से कोई भी चाहे उसका वंश, देश, तथा रङ्ग, पद, शक्ति, कैसा ही हो बच नहीं सकता, भगवान् कृष्ण चन्द्र जी के यह श्लोक उन अमूल्य ग्रथों में से एक है जिनको लाखों मनुष्य अधिक समय से स्वाध्याय के लिये अति पवित्र मानते हैं, जिसकी ओर उनकी श्रद्धा प्रतिष्ठा बहुत ज्यादा है, परन्तु यह एक ऐसी अमूल्य रत्न जड़ित सन्दूक में बन्द है, जिसमें हिन्दुओं के आध्यात्मिक उपदेशों के टपकते हुये मणि मुक्ता जड़े हुये हैं इसको वेदान्त धर्म भक्ति का उपदेश मुक्ति का मार्ग दिखलाता है जिसके अमृत रूपी उपदेशने मनुष्य मात्र

की अध्यात्मिक तथा सामाजिक उन्नति की है। उसने अनेक अशान्ति हृदयों को शान्ति पहुंचाई है। इसने निराशाको आशा के रूप में बदल दिया है। इसने बहुत से गूढ रहस्यों को जो मनुष्य के हृदय में समय २ पर प्रगट होते हैं सरल करदिया है सांराप यह कि इसने बहुत सी आत्माओं को जो कर्म के चक्कर में फंसी हुई थी पूर्ण शान्ति दी है।

पश्चमीय विद्वानों ने इस पुस्तक के अध्यात्मिक उपदेशों की बहुत ही प्रशंसा की है संसार की सब भाषाओं में इसका अर्थ हो चुका है। यह ही नहीं अमरीका जर्मन में गीता भवन है जिसमें इस ग्रंथ का कुल साहित्य (लिटरेचर) मोजूद है परन्तु यह बडे दुख की बात है जहां स्वयं भगवान् ने अवतार लिया और गीता का उपदेश दिया वहां एक भी गीता भवन इतने बडे लम्बे चोडे देश में नहीं है इस लिये उन शूरवीर क्षत्री राजा महाराजाओं का ध्यान जिनके पूर्वजोंने महाभारत के युद्ध में किसी न किसी प्रकार से भाग लिया था इस ओर दिलाया जाता है कि वह ज्योतिसर में एक गीता भवन बनाकर अपने पूर्वजों की स्मृति को कायम रक्खें:—

पाठको को यह पढकर आप प्रसन्न होंगे कि संस्था ने अभी एक पुस्तकालय श्री कुरुक्षेत्र तीर्थ के किनारे बनाया है जिसमें कुल धार्मिक ग्रंथ विशेष कर गीता साहित्य संसार की सब भाषाओं में जो अर्थ किये जा चुके है, एकत्रित किये गये हैं, इस कार्य्य के लिये संस्था दहली निवासी राय साहिब लाला रामचन्द्र लोहिया को धन्यवाद देती है।

सिखों की जिन्दा मिसाल जिससे श्रद्धा भक्ति तथा विश्वास की शिक्षा ग्रहण करना चाहिये कि जिनके राजे महाराजे अमृतसर में पवित्र सरोवर को (जहां ग्रंथ साहिब का रोज पाठ होता है) साफ करने में एकत्रित हुये थे उसी प्रकार ज्योतिसर में एकत्रित होकर श्री कुरुक्षेत्र को साफ कर २ तन मन धन से सहायता दें,

ज्योतिसर सरोवर की पूरी मरम्मत करने की अत्यन्त आवश्यक्ता है संस्था की तजवीज है कि सङ्गमरमर के घाट इत्यादि तथा सरोवर के बीच में एक गीताभवन (हरमन्दर अमृतसर की भांति) बनाया जावे। आशा है कि भारत वर्ष के राजे महाराजे धनवान श्रीमान् धनो निर्धन सभी सहायता देकर इस पवित्र कार्य्य में हाथ बटायेंगे और अपना धर्म पालन कर धर्म के भागी बनेंगे !

इस संस्था के कोषाध्यक्ष (ख़ज़ानची) पंजाब नैशनलबैङ्क अम्बाला ब्राच है। जो दानी दान देना चाहे उपरोक्त बैंङ्क में भेजकर मन्त्री को अवश्य सूचित करें ताकि वह उनको बाज़ाब्ता रसीद भेज दे।

निवेदक:—

बैजनाथ भार्गव,

अवैतनिक उपमन्त्री

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार कमेटी कुरुक्षेत्र।

नोट:—जो महाशय पत्र व्यवहार करना चाहें वह इस पते पर करें ला० दयालीराम मन्त्री श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार कमेटी-रियासत पटियाला।

इस संस्था की रजिस्ट्री भारत सरकार में हो चुकी है।

जमुना प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा.

॥ ॐ ॥

भारत वर्ष की हिन्दू जनता की सेवा में

* अपील *

भारतवर्ष की कुल जनता की सेवा में संस्था की ओर से अड़तालीस कोस में फैले हुये श्री भगद्गीता के धर्म क्षेत्र में बहुत पवित्र तीर्थ स्थानों की उन्नति तथा जीर्णोद्धार के लिये.

भारतवर्ष के धर्म क्षेत्रश्री कुरुक्षेत्र की पवित्रताई और प्राचीनता तथा ऐतिहासिक घटनायें बताने की आवश्यकता नहीं है-किसी हिन्दू को यह जतलाने की आवश्यकता नहीं है कि यह पवित्र भूमि संसार की उत्पत्ति के समय से अवतारों तथा ऋषियों मुनियों के नाम से प्रसिद्ध रही और कलियुग के आरम्भ से पूर्व महाभारत के समय श्रीभगवान कृष्णजी के नाम से प्रसिद्ध रही है. इस नामसे हर एक धार्मिक हिन्दू के हृदय में सन्मान तथा प्रेम की लहर बहने लगती है परन्तु घटना चक्र ने इस पवित्र तीर्थ स्थान को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है--एक धार्मिक हिन्दू को असंख्य तीर्थों के खंडरों का हृदय विदारक दृश्य देखते ही यह विचार होता है कि उसका क्या कर्तव्य है। वह भूमि जहां महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ, खंडरों से भरी पड़ी है। जिसकी बहुत समय से कोई व्यवस्था या देख भाल नहीं की गई। वह भूमि जहां हमारे अवतारों ऋषियों मुनियों के पवित्र चरण पधारे शताब्दियों तक योंही पड़ी रही। यह वही पवित्र भूमि है जहां गीता का आश्चर्यमय ऐतिहासिक अध्यात्मिक उपदेश (जो जीवन मरण के रहस्य को भली भांति प्रकट करता है) सुनाया गया था जो कि। अर्जुन ने रण भूमि में अनेक प्रकार की शंका श्रीकृष्ण भगवान् के प्रति किये हैं। कैसा था अर्जुन ? अर्जुन वीरता, विद्या, उदारता का जो घर था।

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥

भावार्थ—हे श्री कृष्ण भगवान् मैं विजय और राज्य तथा सुख को नहीं चाहता हूं। हे गोविन्द परमात्मा राज्य करके और भोगों करके तथा जीवन करके हम को क्या है ॥ ३२ ॥

येषामर्थे कांक्षितं नो, राज्यं भोगाः सुखानिच ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणां स्त्यक्त्वा धनानिच ॥३३॥

भावार्थ—क्योंकि हे भगवन् हमको जिनके निमित्त राज्य सुख भोग इष्ट है। वेही ये युद्ध में प्राणों की और धनकी इच्छा को त्याग कर मरने को खड़े हैं ॥ ३३ ॥

गुरूनहत्वा हि महानुभावाञ्छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान् रुधिर प्रदिग्धान् ॥
गी० अ० २ श्लो० ५-

भावार्थ—बड़े प्रभावशाली गुरूओं को न मारके ही हमको इस लोक में भिक्षा का अन्न खाना श्रेष्ठ है। क्योंकि-धन की कामना वाले गुरूओं को मारके, तो इस लोक में ही रुधिर के साथ सने हुए भोगों को हम भोगेंगे, (इससे हमको महान नरक प्राप्त होगा)।

कार्पण्य दोषोपहत स्वभावः पृच्छामि त्वां धर्म संमूढ चेताः ।
यच्छ्रेयःस्यान्निश्चितं ब्रूहितन्मे शिष्यस्तेऽहंशाधिमांत्वांप्रपन्नम्
गी० अ० २ श्लो० ॥ ७ ॥

इस प्रकार जब अर्जुन को शोक संन्ताप हुआ और कर्तव्या कर्तव्य का विचार भी जाता रहा, तब फिर धीरज करके मन को सावधान किया, और यह मनमें विचार किया कि वेदों में महात्माओं के मुख से मैंने यह सुना है कि शोक के समुद्र को आत्मा के जानने वाला तरता है यह जानके श्रीकृष्ण भगवान् के प्रति शोक रहित होने के निमित्त प्रार्थना करता भया कि हे भगवन् ! दीनता रूपी दोष

करके दूषित होगया है स्वभाव जिसका, तथा धर्म के विचार में है संमूढ चित्त जिसका, सो मैं आप से विनय पूर्वक पूछता हूं। मुझ को जो निश्चित श्रेय हो, सो कृपा करके कहें क्योंकि मैं आपका शिष्य हूं और आपकी शरणागत हूं अर्थात् सर्व प्रकार से मुझको आप का ही आश्रय है इसलिये आप मुझको उपदेश करें॥

इस प्रकार खेद युक्त अर्जुन को देखकर विविध प्रकार के उपदेशों से उपदेश करते भये हैं अन्त में यह कहा कि तू विद्वान् होकर इस प्रकार का शोक करता है-क्योंकि आत्मा और देह इन दोनों का परस्पर रात और दिवस का अन्तर है—

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥

गी० अ० २। श्लो० १८॥

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि हे अर्जुन ये अविद्यक भौतिक कल्पित देह अन्तवाले अर्थात् अनित्य कहे हैं, और देहधारी जीव के अर्थात् अध्यारोप में आत्मा को देही शरीरी कहते हैं और विवर्तवाद में उसको नित्य कहते और अवनाशी हैं तथा बुद्धि आदि के विषय नहीं जब आत्मा का नाश कभी भी नहीं होता तब तुमको निर्भय होकर युद्ध करना उचित है सुख और दुख को तथा मान अपमान शोक मोहादिकों को एक समान जानकर युद्धमें प्रवृत्त हो इसप्रकार अर्जुन की सम्पूर्ण शंकाओं को अनेक युक्ति प्रमाणों से दूर करके स्वरूपज्ञान् अर्थात् अभेद ज्ञान प्राप्त कराकर युद्ध में जोड़ते भये जिस ज्ञानके प्रताप से अर्जुन जन्म मरण के संदेह से रहित हुआ भगवान् श्री कृष्णदेवजी की आज्ञाको पालन करता भया) वहां एक खंडरों का ढेर है। तमाम ऐतिहासिक पवित्र कच्चे तथा पक्के (सरोवर और प्राचीन समय के पवित्र भवन तथा मन्द्र अब टूटी फूटी दशा में हैं) कुरुक्षेत्र का प्राचीन सरोवर जो सम्भवत् भारतवर्ष में चौड़ाई तथा गहराई के कारण भी सब से बड़ा है। आज मिट्टी तथा झाड़ियों से भरा पड़ा हुआ है। पवित्र और स्मरणीय स्थान ज्योतिसर जहां भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को श्रीभगवत गीता का उपदेश दिया अब वह बहुत ही बुरी अवस्था में है। जिस को देख कर अति खेद होता

है, सारांश यह कि यह सब पवित्र तीर्थ वर्तमान को हिन्दू जनता ने अपनी नज़रों से भुला दिये, न तो उन्होंने अपने कर्तव्य को पहिचाना और न गवर्न्मेंट या हिन्दू राजाओं के सामने (जिनके पूर्वजों के नाम इस पवित्र भूमिके साथ किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धि हैं इस का आन्दोलन किया कि वह इस भूमिके तीर्थोंको फिरसे नया बनाते मुरमत कराते और दूसरी ऐतहासिक तथा पूजनीय स्थानोंको जो सबसे बढ़ कर ऐतहासिक सम्मान लिये हुये हैं, बचाते या प्रबन्ध करते। भारतवर्ष की सनातनी जनता की उस कान्फ्रेंस में जो सन १९१८ के बड़े दिनों के समय में देहली में हुई (जिसमें तमाम भारतवर्ष के प्रतिनिधि इकट्ठे हुये थे) जाति का ध्यान इस पवित्र तीर्थ की ओर दिलाया गया अस्तु। हिंन्दू जनता के धार्मिक तथा प्रसिद्ध पुरुषों की एक कमैटी कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के नाम से बनाई गई। इस संस्था को भारतवर्ष के श्रीमानों धनवानों तथा राजा महाराजाओं ने विशेषकर महाराजा रीवां ने हर प्रकार की सहायता प्रदान की। चार वर्ष से इस संस्था ने अपना कार्य अधिक विस्तार से प्रारम्भ किया है। संस्था अपने कार्य्य का ब्यौरा जो उसने इस पवित्र तीर्थ को उत्तम बनाने में कीया है, प्रसिद्ध २ समाचार पत्रों में छपवाती रही है। परन्तु यह बहुत ही कठिन कार्य है, जहां तमाम हिन्दू जनता की एकट्ठी ही शक्ति की आवश्यकता है, वहां जाति के मुट्ठी भर सेवक क्या कार्य्य कर सकते हैं। नीचे लिखे अनुसार संस्था के कार्य्य का ब्योरा (जो अबतक किया) और साथही वह कार्य्य भी जो अभी करना आवश्यकीय है । बताते हुये इस संस्था की ओर से तमाम भारतवर्ष के हिन्दुओं से विनय पूर्वक अपील है कि उन्हें अपनी धार्मिक प्रतिष्ठा–तथा सम्मान बनाये रखने के लिये एक हो जाना चाहिये। उन ऋषियों और मुनियों अवतारों की (जिन्होंने अपनी आत्मा को पवित्र बनाने तथा ब्रह्म को जानने में व्यतीत किया) सन्तान को चाहिये, कि जहां उनके ऋषि और मुनि के चरण फिरे हैं इसको सम्भाल रखने में अपनी ओर से कोई कसर न रहने दें।

मेरे प्यारे भाईयो जागो उठो चैन मतलो जब तक तुम श्री कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमिका पूर्ण जीर्ण उद्धार न करलो–क्या कार सेवा का जीता जागता उदाहरण जो कि आपके सामने जो हरिमन्दर अमृतसर में सिखोंने दिखलाई है। क्या उसी भांति आप अपना

कर्तव्य पालन नहीं करेंगे ? क्या हिन्दू राजा महाराजा तथा श्रीमान् धनवान निर्धन सभी इस बात को प्रमाणित नहीं करेंगे, कि उन में धार्मिक उत्साहमौजूद है ? क्या तमाम भारतवर्षके हिन्दू जो संसार के बहुत प्राचीनधर्म के पालन करने वाले हैं, और जो अपने पूर्वजों की आध्यात्मिकउन्नति के लिये अभिमान करते हैं, पीछे रहेंगे ! मेरे विचार से वह पीछे न रहेंगे। मैं विश्वास करता हूं कि भारतवर्ष की धार्मिक हिन्दू जनता की बुझी चिनगारी सिखों के धार्मिक उत्साह से एक उत्तम अग्नि के स्वरूप में प्रज्वलित हो जायगी; वह उठेंगे और सब एकत्रित होकर अपनी धार्मिक प्रतिष्ठा को बचाने में किसी से कम न रहेंगे—

संस्था के उद्देश्य तथा नियम।

(१) श्री कुरुक्षेत्र की ४८ कोस की पवित्र भूमि में जो धार्मिक पवित्र व ऐतहासिक भवन सरोवर इत्यादि हैं उनको सुरक्षित रखना।

(२) उनको नये रूप से बनाना।
(३) तीर्थों की खुदाई तथा जंगल साफ़ करना।
(४) धार्मिक पवित्रता का सुरक्षित रखना।
(५) ऐतहासिक लुप्त तीर्थों को नये रूप से बनाना
(६) थानेश्वर ग्राम की दशा को सुधारना
(७) विद्या प्रचार के उपाय का प्रबन्ध करना
(८) सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर यात्रियों की सुविधा के लिये कुरुक्षेत्र तीर्थ पर चबूतरे तथा तिवारियां बनवाना

यह संस्था एक रजिस्टर्ड संस्था है, जिसके उद्देश्य नियमानुसार हैं, और यह काशी भारत धर्म महामंडल की संरक्षता में हैं। सब प्रान्तों के हिन्दू तथा देसी रियासतों से लग भग १०० सभासद हैं।

श्रीमान् महाराज बहादुर सैलाना इसके सभापति हैं। रायबहादुर लाला बनारसी दास बैंकर अम्बाला, व राय सेठ मीनामल साहिब सुमानी आनरेरी मजिस्ट्रेट इसके उप-सभापति हैं। इस संस्था की एक छोटी सी कार्य्य कारिणी कमेटी है जिसके सभासदों

का हर साल चुनाव होता है, प्रसिद्ध तथा अनुभवी इन्जीनियर सज्जनगण (उदाहरणार्थ रायबहादुर लाला रलाराम साहिब सी० आई० ई० आई० एस० ओ० रिटायर्ड चीफ इन्जीनियर व वर्तमान चीफ इन्जीनियर रियासत पटियाला राय बहादुर लाला विशम्भरनाथ साहिब रायबहादुर ला० राधिकानरायन साहिब रिटायर्ड एकजीक्यू-टिव इन्जीनियर रीवां स्टेट) अवैतिनक रूपसे कार्य्य कर रहे हैं। और नकशा इत्यादि व डिज़ायन तैयार करने में सहायता देते रहते हैं। भवनों की हर प्रकार की देख भाल का कार्य्य एक इन्जीनियर साहब करते है, जिनकी सेवा संस्था को मुफ्त मिलती है। एक वैतनिक सुपरवाईजर के चार्ज में है। संस्था के हिसाब निरीक्षण गवर्नमेंट डिप्लोमा प्राप्त निरीक्षक वार्षिक करते हैं।

कुल रुपया बैंक में जमा रहता है। हर प्रकार का लैन देन चैक द्वारा होता है।

संस्था के अबतक के कार्य्य का ब्यौरा।

जो कार्य्य संस्था को करना था वह बहुत ही कठिन तथा आवश्यकीय था—

हर एक वस्तु टूटी फूटी दशा में थी बहुत से मन्दिर तथा भवन खंडर के रूप में थे नीचे लिखे अनुसार कार्य्य जो अब तक पूर्ण हुआ है।

(१) पवित्र सरोवरों के लिये जल की सबसे प्रथम आवश्यक्ता थी। यात्री जो लाखों की संख्या में सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर इकट्ठे होते थे उनमें से अधिक संख्या में यात्री कीचड़ ही में स्नान करते थे। संस्था को राय बहादुर लाला बनारसी दास साहिब और डिस्ट्रिक्टबोर्ड की सहायता के लिये जो आनरेबल दीवान टेक चन्द साहिब डिप्टी कमिश्नर करनाल व वर्तमान कमिश्नर अम्बाला डिवीजन के परिश्रम का फल है। अनुग्रहीत होना चाहिये जिसकी वजह से पिछला चन्द्र भागा का नाला दुबारा फिर खुदवाया गया है जो अब अच्छी दशा में जल दे रहा है—यह नाला १२ मील से आता है—और बड़े सरोवरों उदाहरणार्थ कुरुक्षेत्र तथा सन्याहेत को पानी

आवश्यक्तानुसार पहुंचाता है-पिछले सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर दोनों सरोवर जल से भरे हुये थे पानी हर समय हर ऋतु में आवश्यक्तानुसार रहता है।

(२) बड़ा कुरुक्षेत्र सरोवर जो सम्भव ¾ मील लम्बा ¾ मील चौड़ा है उसके घाटों को चहुओर से १०० गज तक खोदा गया है। सब पक्के घाटों की मरम्मत की गई है। और कुछ नये घाट बनाये गये हैं। घाट और मन्दरों के बीच में तालाब के अन्दर व बाहर कुल मरम्मत करदी गई है अन्दर और बाहर का जंगल बहुत दूर तक साफ़ किया जा चुका है एक कच्ची गोल सड़क चारों ओर बनाई गई है। दहली के श्रीमान् धन्यवाद के पात्र हैं जिनकी कृपा से टूटी फूटी हुई बारह दरिया और यात्रियों के रहने का स्थान तथा धर्म-शाला जो सरोवर पर हैं मरम्मत करदी गई हैं और अब रहने योग्य बन गई हैं-बड़े बड़े प्लेटफार्म घाटों के किनारों पर यात्रियों की सुविधाओं के लिये बनाये गये हैं।

(३) इसी प्रकार सन्याहेत सरोवर जिसमें लाखों यात्री सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर स्नान करते हैं। भिन्न २ स्थानों पर खोदा गया है-इसके अनेक घाटों की मरम्मत की गई है और चार कलकत्ते के धनवानों ने नये घाट तथा कई लम्बे २ प्लेटफार्म बनाये हैं।

(४) बाण गंगा का पवित्र तीर्थ जो महाभारत के समय अर्जुन के बाण से प्रगट हुआ था वो ३५ फूट की गहराई तक खोदा गया है जहां पाताल से पानी फूट पड़ा है जिससे तीर्थ हर समय जल से भरा रहता है। घाटों की मरम्मत की गई है।

(५) भीष्मकुण्ड (जहां भीष्म पितामह ने ६ मास तक उत्तरायण की प्रतीक्षा में जब उन्होंने प्राण त्यागे बाण शय्या पर लेटे रहे) नाभिकमल (जहां ब्रह्म यज्ञ होना बतलाया जाता है) की खुदाई हो चुकी है नाभिकमल के घाटों की पूरी मरम्मत हो चुकी है यहां एक मंदिर और तिवारी भी बनाई गई है।

(६) ज्योतिसर—यहवह पवित्र स्थान है जहां भगवान् कृष्ण ने अपने अमृतमय गीता का उपदेश अर्जुन को दिया अब यहां एक सुन्दर

संङ्गमरमर का मन्डप महाराजा धिराज दरभंगा नरेश की ओर से बनाया गया है और इसी स्थान पर हनूमान जी का एक छोटा सा मन्दिर भी बनाया गया है।

(७) प्राचीन भद्रकाली के मन्दिर की आवश्यक्तानुसार मरम्मत होगई है–देवी कूप या देवी का सरोवर यह भी महाराजा दरभंगा की इच्छानुसार खुदवाया गया है।

(८) एक सुन्दर पुस्तकालय कुरुक्षेत्र तीर्थ के किनारे एक ऊंची भूमि पर बहुत सा रुपया ख़र्च करके बनवाया गया है। संस्था सेठ नन्हेमल जानकीदास के फरम की सहायता को हर्ष पूर्वक ग्रहण करती हुई धन्यवाद देती है जिनकी सहायता से इस भवन में तमाम वेदों से लेकर पुराण इत्यादि और श्री भागवतगीता का साहित्य जो मिल सका तथा भाषा टीका तथा संसार की सब धार्मिक भाषाओं में उसके अर्थ सहित विशेषतः रखे गये हैं। इस पुस्तकालय में स्वर्गवासी महाराजा सर वंकटरमनसिंह बहादुर रीवां की प्रतिमा सङ्गमरमर की और वर्तमान महाराज रीवा का चित्र रखा गया है।

(९) एक नया मन्दिर सैलाना कृष्ण मन्दिर नामक कुरुक्षेत्र पुस्तकालय के पास महाराजा साहिब सैलाना सभापति की ओर से बनाया गया है।

(१०) आप गया खुदाई गई है घाट व बुरजी की कुल मरम्मत की गई है।

(११) वह स्थान जहां अर्जुन पुत्र अभिमन्यु युद्ध करते करते चक्रव्यूह में वीरगति को प्राप्ति हुआ था उस (सूर्य्य कुण्ड) की मरम्मत की गई है।

(१२) अनेक पवित्र तीर्थ उदाहरणार्थ के थल पन्यावह इत्यादि पवित्र भूमि के दूसरे ग्रामों में संस्था के सभासदों ने दौरा कर कर उनको संस्था के उत्साहित करने पर ग्राम वासियों ने ठीक कर दिया है।

(१३) संस्था के सभासदों ने तीन दफ़ा पुहोवा तीर्थ का

दौरा किया ग्राम वासियों तथा डिस्ट्रकबोर्ड का ध्यान इस ओर दिलाया इसका परिणाम यह हुआ कि अब सरस्वती की खुदाई का कार्य्य बहुत से मनुष्यों ने किया जिसमें धनी निर्धन सब ने अपने हाथों से काम किया-और इस कार्य्य के लिये चन्दा भी एकत्रित किया-नये घाटों की मरम्मत तथा पुलों की मरम्मत का कार्य्य डिस्ट्रक्ट बोर्ड ने अपने हाथों में लिया है और मेले की आमद की बचत का रुपया तीर्थ की मरम्मत में लगाये जाने की आज्ञा हो चुकी है।

(१४) सरकार ने (आरकओलोजीकल) विभाग को आज्ञा दी है कि वह प्राचीन इतिहासिक स्थानों का पता लगावे राजा कर्ण के खेड़े की खुदाई हो चुकी है कुछ प्राचीन वस्तुऐं प्राप्त हुई हैं दूसरे प्राचीन पुश्तों पर खुदाई शीघ्र ही प्रारम्भ होजायगी।

(१५) सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर थानेश्वर भूमि में जल, नल द्वारा पहुंचाने के लिये एक बड़ी योजना (स्कीम) तैयार की गई है जो संस्थाओंकी सलाह से गवर्नमेंट के सेनिटरी डिपार्टमेंट में विचारार्थ है।

(१६) एक पुस्तक कुरुक्षेत्र दर्पण नामी गाईड जिसमें इस पवित्र भूमि के ४८ कोस में जो ३६५ तीर्थ हैं उनके विस्तार सहित ४८ अड़तालीस कोसी और आठ कोसी परिक्रमा और प्रसिद्ध तीर्थों के नकशे दर्ज़ हैं उर्दू और हिन्दी में तैयार की गई है।

(१७) एक आज्ञापत्र जिसमें बड़े लाट से लेकर कलक्टरों तक की घोषणा इत्यादि जो उन्हों ने समय समय पर तीर्थों की रक्षार्थ और उनकी पवित्रता के रक्षा के लिये निकाले हैं दर्ज हैं तैयार कीये गये हैं। और अनेक ग्रामों की पंचायतों में अवश्य समय पर कार्य्य करने के लये अलहदा २ बांटे गये है और कुछ प्राचीन घोषणाऐं पत्थरों पर खुदवाकर नोटिस की सूरत में लगाये गये हैं।

(१८) पवित्र भूमि व तीर्थों के लिये व ग्रामों की सफ़ाई इत्यादि के लिये उन सब यात्रियों पर जो कुरुक्षेत्र जंकशन पर व थानेश्वर नगर के रेलवे स्टेशन पर आवें या वहां से जावें एक आना

की प्रति टिकिट पर गवर्न्मेन्ट ने स्वीकार करलिया है जो यकुम मई सन् २४ से बराबर लग रहा है इसकी आमद तीर्थों की मरम्मत इत्यादि और यात्रियों के सुविधा के लिये खर्च में आयेगी।

(११) मन्दिर, घाट, धर्मशाला इत्यादि जो राजाओं महाराजाओं के बनवाये हुये थे उन्होंने अच्छी तरह मरम्मत करादी है-इनमें विशेषकर जिन राजाओं ने सहायता दी है वह यह हैं-काश्मीर, पटियाला, अलवर, लघोड़ा इत्यादि।

(२०) एक धार्मिक अंग्रेज़ी तथा संस्कृत मिडिल स्कूल है, जिसके साथ एक पाठशाला भी है, पाठशाला में केवल संस्कृत ही पढ़ाई जाती है जो कि थानेश्वर में स्थापित समिति की ओर से की गई है धार्मिक शिक्षा और संस्कृत तथा भाषा की शिक्षा इसमें अनिवार्य रखी गई है।

(२१) संस्था ने सूर्य्य ग्रहण के अवसर पर (जो सितम्बर सं. २२ में हुआ) यात्रियों की सेवा की बहुत से प्रतिष्ठित हिन्दू महानुभावों के रहन सहन के लिये स्थान इत्यादि का पूर्ण प्रबन्ध कीया गया था—और यात्रियों के सुविधा के लिये अनेक प्रकार के प्रबन्ध किये गये-संस्था ने जो सेवायें इस अवसर पर की हैं उनका पूर्ण वर्णन प्रबन्ध कारिणी कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में प्रकाशित किया है। बहुतसी सेवा समितियों के स्वयं सेवकों ने सेवा की

(२२) संस्था सदा यात्रियों के तथा राजा महाराजाओं के धनवानों व सरदारों व अफसरों व व्यवस्थापक के सभासदों इत्यादि को सुविधा पहुचाने का पूर्ण प्रबन्ध करती रही, वह सब के सब संस्था के कार्य्य से सन्तुष्ट रहे—

—संस्था की आर्थिक दशा—

संस्था के आरम्भ काल से दिसम्बर सन् १९२४ ई० तक २०१८६४-२ की आय हुई और १८५६६२।)४ पा० व्यय हुआ। दिसंबर सन् १९२४ ई० के अंत मास तक १६२०१।≥)॥ संस्था के पास शेष थे। जो इन कार्य्यों को पूर्ण करने के लिये अपूर्ण हैं। ३०००० रू० के दान के लिये जो प्रतिज्ञायें हैं वह अभी प्राप्त करने हैं इसके अतिरिक्त

अनेक रियासतों ने घाटों और धर्मशालाओं की मरम्मत करने में हज़ारों रुपये व्यय किये हैं।

संस्था के आगामी करने के काम—

सब से अधिक आवश्यक काम गीताभवन ज्योतिसर में बनवाने का है तथा इस के अतिरिक्त इस के चारों ओर पक्की सड़कें निकालनी हैं जिस के व्यय का अनुमान दो हज़ार रुपया केवल सड़कों के लिये है— गीताभवन बनवाने के लिये विशेष धनकी आवश्यकता है।

संस्था के आगामी कार्य्य जोकि पूर्ण करने हैं—

(१) अब तक कुरुक्षेत्र तीर्थ का बहुत थोड़ा सा हिस्सा खोदा गया है दक्षिण ओर का ¾ पूर्व की ओर कोई पक्का घाट नहीं है संस्था के इञ्जीनियर साहबान ने बहुत विचारके बाद इस सरोवरकी कीचड़ को साफ़ करने की तजवीज़ की है, नक़शाजात मय एस्टीमेट तय्यार हो गये हैं ख़र्च के एस्टीमेट व तख़मीने के चार लाख रुपया है जो बमुक़ाबिले उस काम के जो किया जाना मतलूब है (यानी इस एतिहासिक पवित्र तीर्थ को उसकी पहिली सुन्दरताई और गौरव प्राप्त करना बहुत कम है।)

(२) सन्या हेत सरोवर के पूर्व और दक्षिण की ओर अनेक घाटों की आवश्यकता है एक सत्तर फ़ीट लम्बा नया घाट बनाने के लिये रुपया सम्भवत ५०००) व्यय होगा बहुत से घाट और पुल ऐसे हैं कि जिनको तोड़ कर दुबारा बनाना है।

(३) भीष्म कुण्ड—(यह वह स्थान है जहां भीष्म पितामह ६ मास तक शर (बाण) शय्या शयन करते रहे) उसे दुबारा खुदवा कर घाटों की भी दुबारा मरम्मत करना आवश्यकीय है ख़र्च का तख़मीना दो हज़ार रुपया है।

(४) ज्योतिसर मन्दिर तक कोई पक्की सड़क नहीं है वर्षा ऋतु में पंथ जलमय हो जाता है इस कारण दर्शनीयों के कष्ट की सीमा नहीं रहती, इस मन्दिर से कच्ची सड़क का तख़मीना जो पुहोवा की पक्की सड़क से मिलाई जायगी २०००) रु० के लगभग है इस के अतिरिक्त इस पवित्र तीर्थ की खुदाई और उस के पुराने

घाटों की मरम्मत और पुख़ता घाटों की बनवाई के लिये लगभग तीन लाख रुपये की आवश्यकता है।

(५) धार्मिक अंग्रेज़ी और संस्कृत हाईस्कूल को अथवा संस्कृत पाठशाला को (जिसको शास्त्री के दर्जे तक बनाना है) चलाने के लिये अर्थ की आवश्यकता है नित्य प्रति व्यय के लिये ५००००)रुपये की स्थाई कोष की आवश्यकता है और मकान इत्यादि के लिये अनुमान से २००००) रु. चाहिये।

(६) तीन सौ साठ तीर्थों का जो श्री कुरुक्षेत्र के ४८ कोस में है देख भाल करना अभी शेष है, सर्व तीर्थों का जिसमें उनकी वर्तमान दशा व आवश्यक्ताओं का दिगदर्शन है, संस्था की ओर से एक वैतनिक कर्मचारी तैयार कर रहा है, इस कार्य्य के लिये रुपये की विशेष आवश्यक्ता है।

(७) पुस्तकालय जो (नं० ८ पर दर्ज है) तथा कृष्णमंदिर के लिये १००) मासिक की आवश्यक्ता है।

(८) बड़े २ मेलों के अवसरों पर यात्रियों के स्नान करने से जो कीचड़ हो जाती है उस में पांव फिसलने से अनेक यात्रियों की मृत्यु तक हो जाती है उनको रोकने के लिये सरोवर के चहुं ओर पुख्ता सड़क होना विशेष आवश्यक है।

प्रार्थना।

संसथा हिन्दुओं से विशेषकर हिन्दू राजे महाराजाओं तथा धनियों श्रीमानों से प्रार्थना करती है कि वह इस पवित्र धार्मिक बड़े शुभ कार्य्य को अन्त तक पहुंचाने के लिये दानी कर्ण की तरह हृदय खोलकर धन दें—इससे केवल इतिहासिक रहस्य ही नहीं परन्तु यह उनकी जातीय गौरव तथा जीवन का प्रमाण है—इस पवित्र भूमि को जो ऋषियों मुनियों अवतारों के नाम से समबद्ध है और विशेषकर भगवान् कृष्णचन्द्र जी महाराज के नाम से पवित्र मानी जाती है इसको फिर उसी प्रकार उच्च शिखर तक पहुंचाने में हिन्दुओं का गौरव है—

सर्व धन जो दानी दें वह रुपया पंजाब नेशनल बैंक (कोषाध्यक्ष संस्था) की किसी शाखा में भेजें तो उसकी सूचना (कि वह इस संस्था के हिसाब में अम्बाला शाखा में भेजदें) कृपा करके संस्था के मंत्री के पास भेज दें—

(१) संस्था के संरक्षक सभासद

नं.	नाम संरक्षक	संख्या दान	विशेष
१	हिजहाईनेस महाराजा बहादुर रीवां	एक लाख	स्थाई कोस
२	हिजहाईनेस महाराजा बहादुर कश्मीर	१०००)	कश्मीर घाट की मरम्मत
३	हिजहाईनेस महाराजा साहब बहादुर पटियाला	२००००)	मरम्मत राजघाट व मरम्मत पटियाला भवन
४	हिजहाईनेस महाराजा बहादुर राजा बांस बाड़ा	२१००)	पुस्तकालय का एक कमरा
५	" " सेलाना	३०००)	मन्दिर श्री कृष्ण चन्द्र जी
६	" " दरभङ्गा	५०००)	ज्योतिसर मण्डप तथा मरम्मत मंदिर भद्रकाली
७	" " रियासत सरमौर	३०९६)	कमरा सरमौर पुस्तकालय
८	" " जील	५०००)	१ कमरा पुस्तकालय तथा जनाना घाट
९	" " टहरी गढवाल	"	"
१०	" " अलवर	६३१८)	अलवर घाट की मरम्मत
११	" " रियासत कलिसया	५००)	पाठशाला
१२	" " लढोरा	१०००)	मरम्मत लाढोरा घाट

(२) पदाधिकारी तथा सभासद ट्रस्टबोर्ड

	नाम पदाधिकारी	पद	संख्या दान
१	हिजहाईनेस महाराजा दिलीप सिंह		

	सीलाना (सी. आई)	सभापति	३०००)
२	रायबहादुर ला० बनारसीदास रईस. मिल ओनर अम्बाला	उपसभापति	७०३९॥)
३	राय साहिब सेठ मीनामल समानी रईस आनरेरी मजिष्ट्रेट दहली	,,	१०००)
४	धर्मभूषण ला० दयालीराम साहिब बी. ए. भूतपूर्व डाक्टर शिक्षा विभाग पटियाला	मंत्री	अवैतनिक
५	धर्म भूषण रायसाहिब ला० गंगाराम साहिब रईस अम्बाला आनरेरी मजिष्ट्रेट सभासद व्यवस्थापक सभा पंजाब	सभासद	१०००)
६	गोस्वामी निधीरामजी थानेस्वर	,,	
७	ला. महेशदास रईस व आनरेरी मजिष्ट्रेट अम्बाला	,,	,,
८	ला. लक्षमणदास रईस दहली म्यूनिस्पल कमिश्नर	,,	,,
९	ला. शिवदयाल वी. ए. अम्बाला	उपमन्त्री	,,
१०	ला. पालीराम जी थानेश्वर	कोषाध्यक्ष	,,
११	मेर्सस सोटियावन्स, आर्ड कम्पनी डिप्लोमा प्राप्त	कोषनिरीक्षक	

नामावली सभासद श्री कुरुक्षेत्रजीर्ण उद्धार कमेटी

संख्या	नाम मय चन्दा	पद	चन्दा
१	आनरेवल दीवान टेकचन्द साहिब बी० ए० ओ. बी ई. आई. सी. एस. कमिश्नर अम्बाला डिवीजन	,,	३००)
२	डिप्टी कमिश्नर जिला करनाल	,,	,,
३	श्री स्वामी दयानंद जी महाराज महा मंडल काशी	,,	,,
४	आनरेवल राय बहादुर ला. रामसरनदास सी. आई. ई. सभासद राज्य परिषद लाहौरा	,,	२७५०)
५	दीवान बहादुर दीवान कृष्ण किशोर साहब		

	रईस लाहोरा	,,	२०००) घाटों की मरम्मत के लिये
६	राय बहादुर ला. विशम्भर नाथ साहिब रिटायर्ड एकज़िक्यूटिवइन्जीनीयर दहली	,,	,,
७	आनरेबल ला. सुखबीर सिंह साहिब सभा सद राज्य परिषद, रईस मुजफ्फर नगर	,,	११००)
८	ला. अलखधारी साहिब भूतपूर्व फाईनेन्शल कमिश्नर रियासत अलवर रईस अम्बाला	,,	,,
९	रायबहादुर ला. विक्रमाजीतसिंह, एम. एल. सी वकील कानपुर	,,	,,
१०	ला. प्यारेलाल साहिब एस्टेन्ट इन्जीनियर पटियाला	,,	,,
११	दीवान खेमचन्द साहिब बैरस्टर लाहोर	,,	,,
१२	पंडित निधीराम साहिब थानेश्वर	,,	,,
१३	मंत्री इन्द्र प्रस्थ महा मण्डल दहली	,,	,,
१४	मंत्री पंजाब मण्डल फीरोजपुर	,,	,,
१५	ला. साधोराम जी थानेश्वर	,,	,,
१६	ला. राधालाल म्यूनिस्पल कमिश्नर व रईस थानेश्वर	,,	,,
१७	पंडित प्रांणानाथ पंडितान काशमीरयान थानेश्वर	,,	,,
१९	पंडित मुरलीधर साहिब वशिष्ट आनरेरी मेनेजर धार्मिक स्कूल अमोला ज़िला लुधियाना	,,	,,
१९	पंडित गंगाधर ज्योतिषी थानेश्वर	,,	,,
२०	रायबहादुर ला. शिवप्रसाद झुनझुन वाला रईस कलकत्ता	,,	५००)
२१	पंडित रामचन्द्र जी वी. ए. हैड मास्टर ऐ. एस. हाई स्कूल अम्बाला शहर	,,	,,
२२	ला. लछमन दास रईस दहली	,,	,,
२३	ला. तोताराम जी अम्बाला	,,	,,
२४	ला. चिरंजीलाल जी वी. ए. प्रन्सिपल वी. डी. हाई स्कूल अम्बाला	,,	,,

२५	सेठ बल्देवप्रसाद पोन्डरी	,,	,,
२६	पं. नानकचन्द साहिब गवर्नमेंट पेशेनर करनाल	,,	,,
२७	राय साहब ला. राधाकृष्ण साहिब इस्टेट इन्जनीयर रीवां	,,	,,
२८	स्वामी हरी सरन साहब मनयावह	,,	,,
२९	पंडित देवीचन्द साहिब सबडिवीजनल अफसर पटियाला	,,	,,
३०	ला. महेशदास साहिब आनरेरी मजिष्ट्रेट अम्बाला	,,	,,
३१	ला. राघेलाल साहिब फर्म ला. छुन्नामल साहिब रहीस दहली	मरम्मत घाट	२०००)
३२	राय साहिब ला. रूपनरायन साहिब रईस दहली	मरम्मत घाट व तिवारी	२०००)
३३	ला. नानकचन्द साहिब (फर्म नत्थामल जानकीदास रईस दहली	मरम्मत घाट व तिवारी	७०००)
३४	राय साहिब ला. गंगाराम सभासद व्यवस्थापक सभा पंजाब व आनरेरी मजिष्ट्रेट अम्बाला	पाठशाला के लिये	१०००)
३५	ला. बनवारीलाल साहिब रईस दहली	घाट व तिवारी	१०७०)
३६	राय बहादुर ला. अम्बाप्रसाद रईस दहली	मरम्मत घाट	२३००)
३७	सेठ रामलाल साहिब रईस दहली	मरम्मत घाट	४५०)
३८	ला. दरगलाल साहिब रईस अम्बाला	पाठशाला	७००)
३९	दीवान बहादुर कर्नल विशनदास साहिब सी. आई. ई. वजीर, आजम कशमीर		
४०	सरदार साहिब सरदार चतुर सिंह साहब रईस डिप्टी कलक्टर अम्बाला	पाठशाला	१००)
४१	ला० शिवदयाल बी. ए. अम्बाला.		
४२	ला. बोलचन्द साहिब रईस अम्बाला		

४३ राय बहादुर ला. विशम्भर नाथ साहिब
एम. एल. ए कानपुर

४४ आनरेबल राजा मोतीचंद साहिब
सी. आई. एस. सी. एस. रईस बनारस

४५ राय साहिब ला. बालमुकंद रईस अम्बाला

४६ राय साहिब सरदार हरनामसिंह साहिब
एम. एल. सी. रईस रावलपिन्डी

४७ आनरेबल ला. हरकिशनलाल बी. ए.
ऐक्स मिन्स्टर गवर्मेंट पंजाब लाहौर

४८ पंडित लखमीचँद साहिब करनाल

४९ राय बहादुर ला. त्रिभवननाथ साहिब
अफसर बन्दोवस्त मेवाड उदेपुर

५० कुंवर जैदेवसिंह रईस रानी का रायपुर

५१ राय साहिब राधाकिशन साहिब बी. ए.
डिप्टी कमिश्नर इन्कमटैक्स अम्बाला

५२ राय बहादुर राजा ज्योति प्रसाद रईस
जगाधरी

५३ ला. लछमनदास साहब बी. ए. जगाधरी

५४ पंडित गिरधर शर्म्मा साहिब चतुर्वेदी
प्रन्सिपल सस्कृत कालिज लाहौर

५५ सरदार अमरसिंह सेठी म्यूनिसपल कम-
श्नर करनाल

५६ रायबहादुर ला. श्यामसुंदर लाल जी सी.
आई. ई. फाइनैसल कमिश्नर अलवर

५७ राय ईसरीप्रसाद साहिब एस. डी. ओ.
पटियाला

५८ लाला. उग्रेसन साहूकार खेडी तहसील
थानेश्वर

५९ ला. नरसिंह दास साहूकार जठलाना

६० ला. गनेशीलाल साहिब लाडोवह

६१ ला० मूलचन्द रईस अम्बाला

६२ राय बहादुर ला० हरदत्त राय चमडिया
कलकत्ता

६३	राय बहादुर ला० विसेसरदास जी डग्गाव	बीकानेर पुस्तकालय	५१००)
६४	जस्टिस सर ज्वालाप्रसाद जज पटना	पाठशाला	२००)
६५	सेठ हजारीलाल मोहनलाल कलकत्ता	,,	२०००)
६६	सेठ गातुमल साहिब कलकत्ता	नयाघाट	२०६१)
६७	सेठ रूडमल आल माल कलकत्ता	,,	२०५०)
६८	सेठ तोताराम रोडाराम जी कलकत्ता	दो नयेघाट	३०००)
६९	राजा साहब कोलन गेड (मदरास)	गीता	१००)
७०	ला० प्रभूदयाल साहिब झासा	कु पाठशाला	५००)
७१	पं० अमर नाथ रिटापंडे तहसील दार दहली		
७२	राय साहिब ला० लछुमल साहिब साबिक तहसीलदार थानेश्वर		
७३	सरदारपालसिंह साहिब तहसीलदार		
७४	बा० राम रतन साहिब रिटायर्ड एस. बी. ओ. शिमला		
७५	ला० कश्मीराकर शिमला		
७६	पंडित शिवनारायन साबिक दीवान लधोडा		
७७	बख्सी सोहनलाल साबिक एम, एल, ऐ प्लीडर लाहौर		
७८	पं० प्रभानाथ रिटायर्ड तहसीलदार अम्बाला		
७९	मिस्टर टी वी. शेषगिरी अय्यर मदरास		
८०	आनरेवल सर देवीप्रसाद साहिब सर्वाधिकारी एम. एस सी कलकत्ता-	पाठशाला	१००)
८१	आनरेवल सर बी एन शर्मा मेम्बर एक ज्यूटिव कौंसिल गवर्न्मेंट आफ इन्डिया मदरास		
८२	रायबहादुर ला० दयाराम साहिनी एम. ऐ. लाहौर		
८३	आनरेवल. जी. ऐस. खापंड़े. एम. एस. सी पटना-		

८४ बा० जोगेन्द्रनाथ मुकर्जी एम. एन. ए.
गीता कलकत्ता-- गी० १०)

८५ ला० मुरारीलाल एस. डी. ओ. पी.
डबलू. डी. करनाल

८६ पंडित बैजनाथ भार्गव रिटार्ड एस.
बी. ओ मथुरा—

८७ पंडित परमात्मा लाल मुरार-फेवा

८८ ला० धन्नालाल साहिब थानेश्वर

८९ सरदार बल्देवसिंह रईस पन्यावह

त्रैलोक्यनाथ शर्मा द्वारा
जमुना प्रिन्टिंग वर्क्स
में
मथुरा में मुद्रित